मन की गूंज

काव्य – संग्रह

झुंड थी बहरों की
और
नगाड़ा बजा रहे थे गूंगे,

मचा था हो हल्ला हर मंजर में
और
सुना कुछ नहीं इन गलियारों ने।

✍ - रोहित चौरसिया

September 2025 **ISBN: 978-93-343-9761-1**

Copyright © 2025 Rohit Chaurasia
All rights reserved.

इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः प्रस्तुत, संग्रहित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है – चाहे वह इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या किसी अन्य तरीके से हो।

यह पुस्तक एक काव्य – संग्रह है।
इसमें व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं पर आधारित हैं।

Published in September 2025

ISBN: 978-93-343-9761-1

Book Title: मन की गूंज

Subtitle: काव्य – संग्रह

Author & Publisher: Rohit Chaurasia

Address: Uttar Pradesh, India

Publishing Field: Literature

Language: Hindi

Publication Type: Digital Download and Online

For queries: ebooks [dot] asha [at] Gmail [dot] com

Contents

मैं मूर्ख हूँ

अशांत

सवाल

चार दीवार

क़दर नहीं

सस्ती हैं नींद

भूखा हूँ

बेहाल

मैं अंजान

क्या थे

दुनिया

बट गया

मजदूर

अकेला

कहा चले गए

मोह

प्रेम करो

शब्द या जादू

हंस लो ज़रा

मैं ठहरता

फिर से बना

खिलौने

सुन

चलना है मुझे

बहता जा

आंसू

मेरी पहचान

नैना

गुलाब मेरा भी था

ढूंढू कहाँ

संग तेरे

सब्र रखना था

लिख दूँ मैं

आस लगी है

बेजान कर गए

प्रीत और प्रेम में

आभार

मैं मूर्ख हूँ

ओ मेरे ज्ञानी दोस्त,
थोड़ी मेरी भी सुन लो,
थोड़ा ना समझ ही सही,
मुझे भी समझ लो।

पल दो पल कहा,
मेरी भी सुन लो,
जब ना तब,
मुझे ज्ञान देते हो,
कुछ और कभी,
मेरा भी ले लो।

ज्ञानी तो मैं हूँ नहीं,
पर जो सही,
वही ले लो,
सच बोलता हूँ,
मूर्ख जो हूँ,
मूर्ख तो खुद को मानता हूँ,
तभी तो,
तुम ज्ञानी को
ज्ञान देने की बात कहता हूँ।

- रोहित चौरसिया

अशांत

अशांत मन है,
दिमाग है,
दिन है और
रात भी,
कैसे करें बयां,
एक-एक पल जो अशांत है।

शोर है,
ज़ोर है,
नाज़ुक पड़ा भोर है,
प्रेम से ज़्यादा आज
अहम, अहंकार,
आक्रोश, घृणा, बहिष्कार है।

रूठे हैं,
जलते हुए हर लम्हे जीते हैं,
जीते हैं,
अमृत में विष घोल कर पीते हैं...

- रोहित चौरसिया